विनोद बब्बर का रचना–संसार

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,नांदेड

पीएच.डी शोध उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध

.

शोधकर्ता

पूनम सत्यनारायणजी शर्मा

शोध निर्देशिका

डॉ. अरूणा राजेंद्र शुक्ल

(एम.कॉम.,एम.ए.,बी.एड., पीएच.डी)

हिन्दी विभाग अध्यक्षा,

(एन.ई.एस. सायन्स कॉलेज नांदेड)

पृष्ठभूमि–
प्राचीन भारतीय वाड्मय वेदों, संहिताओं, आरण्यकों, उपनिषदों, स्मृतियों आदि ग्रन्थों के अतिरिक्त श्रीमद्भगवद् गीता प्रभृति ग्रन्थों के कारण समृद्ध रहा है। ब्राह्मी लिपि से नागरी लिपि की ओर अग्रसर होते साहित्य सृजन में हिंदी साहित्य को अनेक संत कवियों, मनीषियों, समर्पित साहित्यकारों का योगदान मिला जो वर्तमान तक जारी है। इन ऋषि तुल्य रचनाकारों ने अपने रचना–संसार से हिंदी साहित्य की महान सेवा की है। हिंदी साहित्य के प्रति हर प्रबुद्ध व्यक्ति की तरह मेरी भी गहन रुचि रही है। मेरे मन में हिंदी साहित्य के प्रति जो अगाध श्रद्धा एवं आत्मीयता रही है उसी ने मुझे अध्ययनशीलता प्रदान की है।

साहित्य की विविध विधाओं में यूं तो कहानी सदा से ही लोकप्रिय रही है। बचपन में दादी–नानी से कहानी का रसास्वादन इस विधा के प्रति विशेष आकर्षण प्रदान करता है। पंचतंत्र की कहानियों से शुरू हुआ यह सिलसिला प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश से विनोद बब्बर जैसे अनेक कहानीकारों तक जारी है।

कहानी के अतिरिक्त बोध कथाएं, यात्रा–संस्मरण आदि भी उसी वाचक परम्परा का अंग रही हैं जो हमें घुट्टी में प्राप्त होती है। इन्हें सुनते हुए बाल मन को जो सुखद अनुभूति होती है वह शब्दातीत है। ऐसे प्रसंग उसे भविष्य की तैयारी के लिए नई ऊर्जा प्रदान करते हैं तो कठिन परिस्थितियों से जुझने का हौसला भी देती है।

काव्य की विभिन्न विधायें सदैव से ही लोकप्रिय रही हैं। अपनी मातृभूमि से हजारों मील दूर रहने को अभिशप्त गिरमिटीये एक कविता (रामचरितमानस) के माध्यम से अपनी संस्कृति से जुड़े रहे हैं तो गांव–गांव आजादी की अलग जगाने में गीतों के महत्व को कौन नकार सकता है। इसी प्रकार व्यंग्य जहां गुदगुदाता है वहीं निबंध किसी विषय विशेष का दार्शनिक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

1. विनोद बब्बर के साहित्य पर शोध कार्य का कारण

यूं डॉ. विनोद बब्बर का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। देश भर की पत्रिकाओं में उनकी रचनाएं अक्सर प्रकाशित होती रहती है इसलिए उनसे सामान्य परिचय रहा ही है लेकिन पिछले दिनो यूजीसी के व्यास चैनल पर प्रसारित उनके व्याख्यान सुनकर उनके विद्वता से प्रत्यक्ष साक्षात्कार हुआ। श्री विनोद बब्बर साहित्य की हर विधा (एकांकी को छोड़कर) पर अपनी लेखनी चला चुके हैं।

कुशल वक्ता, गंभीर चिंतक, पूर्व प्रध्यापक लेकिन वर्तमान में एक पत्रिका के संपादक श्री विनोद बब्बर के व्यक्तित्व और कृतित्व को और जानने की उत्सुकता ने मेरे सामने उनके बहुमुखी एवं बहुमूल्य साहित्यिक योगदान का भंडार खोल दिया। अनेक राष्ट्रीय समाचार पत्रों में नियमित रूप से कालम लिखने वाले श्री बब्बर हिंदी के अनन्य समर्थक है तो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के परम शिष्य आचार्य विनोबा भावे के सद्प्रयासों से स्थापित नागरी लिपि परिषद के राष्ट्रीय सचिव के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे है। आजीवन ब्रह्मचारी रहकर हिंदी और देवनागरी, जो कि संविधान की आठवीं सूची में शामिल अनेक भाषाओं तथा विदेशी भाषा नेपाली की अधिकारिक लिपि भी है, के प्रचार–प्रसार में लगे श्री विनोद बब्बर के रचना–संसार पर शोध करने का मेरा निश्चय है।

2. विनोद बब्बर के लेखन की विशेषताएं

परिवर्तन सृष्टि का नियम है। बदलते परिवेश में कहानियों में भी नयापन आया है। आरंभ में जो एक विशेष प्रकार का आदर्शवाद दिखाई देता था लेकिन वर्तमान में जो बदलाव हुए हैं। पुरानी रचनाओं में एक विशेष प्रकार का परिवेश रहता था जिससे आज का पाठक अपरिचित है। ऐसे में यह प्रश्न पाठक मन में उठना स्वाभाविक है कि वर्तमान दौर की कठिनाईयों के बीच राह दिखाने वाली कहानियां क्यों नही लिखी जाती। लेकिन जब आधुनिक कहानीकारों जिनमें श्री विनोद बब्बर भी शामिल हैं, की कहानियों को पढ़ा तो मेरी धारणा बदल गयी। यह तथ्य सामने आया कि स्वतंत्रता के बाद लिखी गयी कहानियां जीवन से और जीवन के मूल्यों से सीधा संबंध रखती है। नई कहानी ने कहानियों की दशा बदल दी अतः आज परिवर्तन का यह क्रम इन कहानियां को लम्बाई की बजाय गहराई की ओर ले जा रहा है जहां मानव जीवन के हर पक्ष को समग्रता से प्रस्तुत करने का कार्य कहानी करती है। आदर्शवाद का स्थान यथार्थवाद ने ले लिया है। मानव जीवन की सही परिभाषा श्री बब्बर की कहानी में मिलती है, जहां कहानीकार जीवन की हर वास्विकता को पाठकों के सामने रखते हैं। शिक्षा के प्रचार–प्रसार से औद्योगिकरण ने देश में जिन परिवर्तनों को साकार रूप दिया है उसने अनेक प्रकार की विकृतियां भी हमारी झोली में डाली हैं। बदलते संबंधों और शहरीकरण ने मानव को यन्त्र बना दिया है। बेशक रोटी की समस्या बेटी और मातृभूमि से बिछोह तक जा पहुंची। अपनों से ज्यादा अपनी संस्कृति और परिवेश के छूटने की छटपटाहट इन कहानियों में देखने को मिलती है। सबसे मुख्य बात यह है कि श्री विनोद बब्बर की कहानी को गुजरते हुए पाठक स्वयं को इस कहानी का एक पात्र महसूस करने लगता है क्योंकि उसमें संवेदनाएं है। परिवेश कहीं भी अपरिचित नहीं लगता इसलिए मैं कह सकता हू कि मेरे सर्व प्रिय रचनाकार विनोद बब्बर हैं। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से मूल्य विघटन को रेखांकित किया है। उनकी कहानियों में आज का वर्तमान जीवन चित्रित हुआ

विनोद बब्बर आधुनिक युगबोध के रचनाकार हैं। उनकी कहानियां आधुनिकता से ओतप्रोत हैं। वे आधुनिकता की चकाचौंध में छिपे अंधेरों को हमारे सम्मुख प्रस्तुत करने में सिद्धस्त हैं। सांस्कृतिक विचारधारा को उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से प्रभावित करने का प्रयास किया है. विनोद बब्बर की कहानियों में आधुनिक जीवन, टूटते परिवार, पीड़ा और तनाव, बेरोजगारी, निराशा, कामवासना, शराब, सौंदर्य प्रेम और संगीत, मध्यमवर्गीय जीवन, रूढी प्रथा, परंपरा, भय एवं घुटन, आर्थिक समस्या,

नारी समस्या, उदासीनता, अकेलापन, अनैतिकता आदि बातों को चित्रित किया है. उनकी दृष्टि से ये समस्याएं आधुनिकता का श्बाई प्रोडक्टश हैं. इन सभी मुद्दों को लेकर विनोद बब्बर के कहानियों का अध्ययन विस्तृत रूप से किया जायेगा. डॉ. राहुल लिखते हैं 'विनोद बब्बर के कहिनियों में प्रेम, सेक्स, घुटन, भय, अकेलापन, टूटते सम्बन्ध, परायापन आदि का चित्रण हुआ है।[2] टूटते हुए परिवार, घर से अलगाव, छुटकारा पाने की ललक, स्त्री पुरुष के अजीब सम्बन्ध और असुरक्षा भाव, अपनी अस्मिता की खोज, कुंठित व्यक्तित्व, तनावग्रस्त तथा दुविधाग्रस्त व्यक्तित्व आज के व्यक्ति की विडम्बना है। विनोद बब्बर जी की कहानियों में इन्ही अनुभूतियों की सूक्ष्मता से अभिव्यक्ति हुई है।उनके पात्र जीवांत हो पाठक से संवाद करते हैं। आधुनिकता की लहर से उपजे नकारात्मक परिणामों का चित्रण विनोद बब्बर की कहानियों में दोने को मिलता है। उन्होंने मूल्यों का ह्रास, युवा मानसिकता, आत्मकेंद्रित मनुष्य जो लगातार अपने जाल में फंसता जा रहा है को विशेष रूप से रेखांकित किया है। यह अकारण नहीं है कि श्री बब्बर की कुछ कहानियों का अनेक भारतीय भाषाओं में अनुवाद एवं प्रकाशन हो चुका है तो उनके बहुचर्चित कहानी–संग्रह 'फटा–कोट' का गुजराती अनुवाद 'फाटला कोट' (अनुवादक– डा. मनुबेन पटेल, इडर, गुजरात) गुजरात साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित है।

'पीर पराई' और 'फटा–कोट' उनके कहानी संग्रह प्रकाशित है तो उन्होंने व्यंग्य कथाएं भी कम नहीं लिखी। समसामयिक विषयों पर बिना किसी पक्षपात के शालीन व्यंग्य प्रस्तुत करने में श्री विनोद बब्बर सिद्धहस्त हैं। उनकी व्यंग्य कथाएं जहां सामान्य पाठकों को गुदगुदाती हैं वहीं दोषी को कसमसाती है। वह चुभन तो महसूस करता है लेकिन आवेशित हर्गिज नहीं। विनोद बब्बर के शिल्प की यह विशेषता है कि देषी को सहज बदलाव के लिए प्ररित कि जाए। 'ज्येष्ठ में बसंत' और 'जूतों का संसैक्स' श्री विनोद बब्बर के प्रकाशित व्यंग्य–संग्रह हैं।

यूं आज यात्रा–वृत्त बहुत कम लिखे जा रहे हैं। महापण्डित डा. राहुल सांकृत्यायन सा घुमक्कड़पन डा. विनोद बब्बर में भी देखने को मिलता है। हिंदी के प्रचार–प्रसार के भारत वर्ष के दुगर्म स्थानों सहित लगभग सभी राज्यों और दुनिया के विभिन्न 16 देशों की यात्रा करने वाले श्री बब्बर के यात्रा–संस्मरण देश की विभिन्न पत्रिकाओं में पढ़ने को मिलते हैं। सांस्कृतिक राजदूत के रूप में वे जहां गये वहां के लोगों से संवाद करते हुए अपनी भाषा और संस्कृति से उन्हें परिचित कराने के अतिरिक्त उस स्थान के इतिहास, भूगोल, संस्कृति विशेष रूप से साहित्य की जानकारी उपलब्ध कराते उनके संस्मरण गजब का आकर्षण रखते हैं। उनका हर संस्मरण वहां के साहित्यकारों, कलाकारों की खोजखबर लेता है तो तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत करता है। यह उनकी खोजपरक पत्रकारिता का प्रभाव है कि वे विदेशी संस्कृति में भी समानता का कोई न कोई तत्व अवश्य तलाश लेते हैं।

मैंने शोधकार्य के लिए विनोद बब्बर के रचना–सांर' शोध प्रबंध के लिए निश्चित किया। विनोद बब्बर का रचना–संसार इतना व्यापक है अतः लघुशोध प्रबंध की अपनी मर्यादा होने के कारण इस विषय को न्याय नहीं दिया जा सकत। अतः पीएच. डी. इस विषय को लेकर करने और विषय को न्याय एवं व्यापकता प्रदान करने का निश्चय मैंने किया। समग्र रूप से इस विषय का अध्ययन पूर्ण हो ,यही मनोकामना है।

विनोद बब्बर का रचना–सांर –

विषयनुक्रमनिका–

प्रथम अध्याय– आधुनिकता अर्थ, स्वरुप एवं व्याप्ति
द्वितीय अध्याय– विनोद बब्बर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
तृतीय अध्याय– विनोद बब्बर की कहानियों का कथ्य, शिल्प, आधुनिता तथा संवेदना।
चतुर्थ अध्याय– विनोद बब्बर की कविताओं में सौंदर्य बोध, सम्प्रेणता, शिल्प तथा आधुनिकता।
पंचम अध्याय– विनोद बब्बर के यात्रा–संस्मरणों में भूगोलिक भिन्नता के सांस्कृतिक प्रभावों को तुलनात्मक अध्ययन।
षष्ट अध्याय– विनोद बब्बर के निबंधों का शब्द शिल्प, तर्क प्रस्तुतीकरण, भाषायी लालित्य, सम्प्रेरणा क्षमता का अध्ययन।
सप्तम अध्याय– संपादक, समीक्षक और व्यंग्यकार के रूप में विनोद बब्बर का मूल्यांकन।
अष्टम–उपसंहार

सन्दर्भग्रन्थ सूची–
अ) मूलग्रन्थ
ब) सहायक ग्रन्थ
क) पत्र–पत्रिकाएँ
ड) साक्षात्कार

प्रथम अध्याय

आधुनिकता अर्थ, स्वरुप एवं व्याप्ति–

इस अध्याय के अंतर्गत साहित्य और आधुनिकता के अन्तर्संबंध की विविध परिभाषाओं को स्पष्ट किया जायेगा। आधुनिकता शब्द का उद्भव और विकास आधुनिकता और आधुनिकतावाद में अंतर स्पष्ट किया जायेगा. आधुनिकता का स्वरुप स्पष्ट करते हुए उसके घटकों की विस्तार से चर्चा की जाएगी. आधुनिकता की व्याप्ति स्पष्ट करते समय आधुनिकता और परंपरा, आधुनिकता और समकालीनता, आधुनिकता और विज्ञान का प्रभाव, आधुनिकता और मूल्य संक्रमण, आधुनिकता और ऐतिहासिकता , संबंधों का टूटना एवं बनना, अकेलापन और आधुनिकता, अलगाव और आधुनिकता आदि मुद्दों पर विस्तार से अध्ययन होगा.

––––––

द्वितीय अध्याय–

विनोद बब्बर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व–

विनोद बब्बर के बाह्य और रचनात्मक व्यक्तित्व का परिचय इस अध्याय में दिया जायेगा। विनोद बब्बर का जन्म प्रथम जुलाई 1950 को दिल्ली में हुआ था। जन्म से लेकर उनके बचपन, माता–पिता, परिवेश, शिक्षा, जीवन, विदेशी प्रवास, पुरस्कार एवं सम्मान आदि सभी बातों का अध्ययन इस अध्याय में होगा। साथ ही उनका कृतित्व–

1. कहानीकार के रूप में विनोद बब्बर
2. संपादक के रूप में विनोद बब्बर
3. निबंधकार के रूप में विनोद बब्बर
4. यात्रा संस्मरणकार– विनोद बब्बर
5. कवि के रूप में विनोद बब्बर
6. विचारक के रूप में विनोद बब्बर
7. स्तम्भकार के रूप में विनोद बब्बर
8. व्यंग्यकार के रूप में विनोद बब्बर
9. समीक्षक के रूप में विनोद बब्बर
10. सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में विनोद बब्बर

विविध विधाओं को लेकर विनोद बब्बर के कृतित्व का परिचय एवं अध्ययन किया जायेगा।इस अध्याय में विनोद बब्बर के सभी प्रकाशित ग्रन्थो तथा अन्य प्रकाशित रचनायों का विशेषताओं के साथ अध्ययन किया जायेगा जिसमें निम्नलिखित प्रकाशित पुस्तकें हैं–

ज्येष्ठ में बसंत (व्यंग्य–संग्रह)
जूतों का संसैक्स (व्यंग्य–संग्रह)
पीर पराई (कहानी–संग्रह)
खरी खोटी (कविता–संग्रह)
चेतना के स्वर (निबंध संग्रह) <u>नोट– इस पुस्तक पर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से लघुशोध प्रबंध हो चुका हैं।</u>
मांगे सबकी खैर (कथा–संग्रह)
अजन्मी चीख (कन्या भ्रूण–हत्या विरोधी अभियान)
फटा कोट (कहानी–संग्रह) गुजराती भाषा में भी अनुदित/प्रकाशित
इब्सन के देश में (यात्रा–वृतांत)
भाषा और संस्कृति (हिंदी के प्रचार–प्रसार से संबंधित आलेख संग्रह)
इन्द्रप्रस्थ से रोम तक (यात्रा–वृतांत)
लक्ष्मणरेखा (निबंध संग्रह)
देशाटन सौंदर्य (यात्रा–वृतांत)

तृतीय अध्याय–

विनोद बब्बर की कहानियों का कथ्य, शिल्प, आधुनिता तथा संवेदना। विनोद बब्बर एक कुशल कहानीकार हैं। उनकी हर रचना में परंपरा और आधुनिकता का संतुलन देखने को मिलता है जो अपसंस्कृति की सड़ांध के बीच सुवासित मार्ग दिखता है। नई कहानी में उनका स्थान महत्वपूर्ण है। उनके लेखन से नई कहानी को कलात्मक सार्थकता मिली है। विनोद बब्बर का

कहानी साहित्य आधुनिक जीवन को यथार्थ रूप में अभिव्यक्त करता है। उनकी कहानियों में मानवीय संवेदना का धरातल निर्मित हुआ जो अत्यंत सूक्ष्म है और जिससे आधुनिक जीवन के सारे आयाम आकर सिमट जाते हैं। विनोद बब्बर एक ऐसे कहानीकार हैं जिन्होंने भारतीय समाज को अंतर्राष्ट्रीय धरातल पर रखकर देखने – समझने का कार्य किया है। उनकी कहानियों में आधुनिक जीवन की विसंगतियां यथार्थपूर्ण ढंग से व्यंजित हुई है। विनोद बब्बर की कहानियों में आधुनिकता के स्वर मिलते हैं. उनकी कहानियाँ आधुनिकता के राह की बाधाओं का यथार्थ चित्रण है.। उन्होंने वास्तविकता को अपनाया है। हिंदी और भोजपुरी के प्रसिद्ध उपन्यासकार डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव उनके पात्रों के बारे में लिखते हैं 'अनुभव की गलियों ने विनोद जी को बहुत कुछ सिखया है। उन्होने जैसा व्यक्ति देखा, बिल्कुल वैसा ही चित्रित कर दिया। उन्हें परवाह नहीं कि, चरित्र प्रभावी बनेगा या नहीं।'[1]

भावनगर विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष रहे प्रसिद्ध आलोचक प्रो. (डॉ) सुन्दरलाल कथूरिया के मतानुसार 'हल्के हल्के और छोटे छोटे वाक्य, एक पर एक जमे हुए सहज प्रवाह में बहते चलते हैं; फिर भी सूक्ष्म भाव अथवा विचार का कोई रेशा छूटने नहीं पाटा। तमाम अलंकरण, परिवेश की बुराईयों से बचते हुए भाषा इतनी सरस, सरल और सहज है कि विषयवस्तु और पाठक के बीच में कोई व्यवधान ही नहीं रह जाता।[3]

इस अध्याय में विनोद बब्बर के भाषा की विशेषताएं और शिल्प विधान का अध्ययन प्रस्तुत किया जायेगा. विनोद बब्बर की कहानियों में आधुनिक परिवार, पीड़ा, तनाव, बेरोजगारी को संवेदात्मक स्पर्श देते हुए यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया गया है उसका शिल्प और सम्प्रेषणता अद्वितीय है।

चतुर्थ अध्याय–

विनोद बब्बर की कविताओं में सौंदर्य बोध, सम्प्रेणता, शिल्प तथा आधुनिकता।

विनोद बब्बर की कविताओं में नये प्रयोग है तो छन्द को यथा स्थिति समन्वय का स्वर भी है। उनकी काव्यात्मक अभिव्यक्ति में प्रकृति की अनेकरूपा छटाएं हैं, तो दूसरी ओर समसामयिक स्थितियों का यथार्थ चित्रण, समसामयिक परिस्थितियों के साथ–साथ आस्था, मानवता और राष्ट्रीयता के स्वर हैं। उनका काव्य–सृजन संसार किसी भी शोघार्थी के आकर्षण का केन्द्र तथा अनुसंधान का आधार हो सकता है इसलिए इस अध्याय में उनके काव्य के पक्षों पर चर्चा होगी।

पंचम अध्याय–

विनोद बब्बर के यात्रा–संस्मरणों में भूगोलिक भिन्नता के सांस्कृतिक प्रभावों को तुलनात्मक अध्ययन।

यात्राएं आदिकाल से ही जारी हैं। हर मनुष्य को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना ही पड़ता है। अधिकांश यात्राएं रोजी–रोटी के लिए तो कुछ राज्य विस्तार के लिए होती है। कुछ यात्राएं शिक्षा और ज्ञान के विस्तार के लिए होती है तो आजकल बदलते परिवेश और बढ़ती सुविधाओं ने व्यापार से ज्यादा यात्राएं पर्यटन के लिए होती है। इस श्रेणी की अधिकतर यात्राएं मौज–मस्ती के साथ शुरु होकर थकान के साथ संपन्न हो जाती है लेकिन जब कोई साहित्यकार, कलाप्रेमी, सम्पूर्ण मानवता में एकात्मकता की तलाश करने वाला मनीषी कहीं जाता है तो उसका कुछ अलग ही महत्व होता है। सांस्कृतिक आदान–प्रदान और दो संस्कृतियों को निकट लाने की के प्रयत्नों में सम्राट अशोक के बहन और पुत्र की श्रीलंका तथा कुछ अन्य देशों की यात्राएं तथा चीनी यात्री हुन्सांग तथा कुछ की भारत यात्रा को इस श्रेणी में रखा जा सकता

वैसे संस्मरण सदैव से ही विशेष आकर्षण का केन्द्र होते हैं। इस अध्याय में विनोद बब्बर के यात्रा–संस्मरणों में भूगोलिक भिन्नता के सांस्कृतिक प्रभावों को तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा।

षष्टम अध्याय–

विनोद बब्बर के निबंधों का शब्द शिल्प, तर्क प्रस्तुतीकरण, भाषायी लालित्य, सम्प्रेरणा क्षमता का अध्ययन।

विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध आलेखों, निबंधों के अतिरिक्त अब तक प्रकाशित निबंध संग्रहों का वर्गीकरण करते हुए ललित निबंध की विभिन्न परिभाषाएं, उसका विकास, विनोद बब्बर के निबंधों का तुलनात्मक अध्ययन, विशिष्ट विद्वानों के अभिमत इस अध्याय में शमिल होंगे।

सप्तम अध्याय–

कवि, संपादक, समीक्षक और व्यंग्यकार के रूप में विनोद बब्बर का मूल्यांकन।

इस अध्याय में बहुमुखी प्रतिभा के धनी लेखक, कवि, व्यंग्यकार, संपादक, समीक्षक विनोद बब्बर द्वारा इन विधाओं के माध्यम से हिंदी वाड्मय को समृद्ध करने के प्रयासों की विवेचना प्रस्तुत की जाएगी। साप्ताहिक राष्ट्र–किंकर के संपादक,

'हम सब साथ–साथ के सलाहकार संपादक

'नागरी संगम' के प्रबंध संपादक

यथासंभव के साहित्य संपाइक
योग–किंकर के सलाहकार संपादक
के रूप में विनोद बब्बर द्वारा लिखे गये सम्पादकीय तथा देश के स्वनाम धन्य साहित्यकारों की कृतियों की समीक्षात्मक टिप्पणियों उनके साहित्यिक अनुभव, कौशल, अध्ययनशीलता की परख हो सकती है। तीखे तेवर के व्यंग्य कवि और व्यंग्यकार के रूप में विनोद बब्बर की उपलब्धियों की चर्चा इस अध्याय में होगी।

उपसंहार–
इस अध्याय में समग्र अनुसन्धान का समीक्षात्मक संक्षिप्त विवेचन किया जायेगा। यह विवेचन अध्याय के अनुसार होगा. जिसमें विनोद बब्बर के रचना–संसार, उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं, उनकी उपलब्धियों आदि को अंकित किया जायेगा। साथ ही शोधप्रबंध की उपलब्धियां, अध्ययन की नई दिशाों की जानकारी भी पड़ताल की जाएगी।
———

संदर्भ ग्रंथ–

1. **हिंदी साहित्य के बदलते हस्ताक्षर,** लेखक . डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव, . पृष्ठ क्रमांक– 112
2. **मेरा समीक्षा संसार**. लेखक डॉ. राहुल, पृष्ठ क्रमांक– 58
3. **साहित्य पारिजात,** संपादक– प्रो.(डॉ.) सुन्दरलाल कथूरिया, पृष्ठ क्रमांक– 37

शोधकर्ता
पूनम सत्यनारायणजी शर्मा
एम.ए.,बी.एड.,

शोध निर्देशिका

डॉ. अरूणा राजेंद्र शुक्ल
(एम.कॉम.,एम.ए.,बी.एड., पीएच.डी)
हिन्दी विभाग अध्यक्षा,
(एन.ई.एस. सायन्स कॉलेज नांदेड)